स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उद्यमिता प्रतिभा, व्यावसायिक आकांक्षा, जोखिम लेने की क्षमता एवं उद्यमी स्व-प्रभावकारिता का तुलनात्मक अध्ययन

फाउंडेशन ऑफ़ एजुकेशन विषय से पी-एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध की रूपरेखा

शोधार्थिनी

आरती विश्वकर्मा

शोध निर्देशिका

डॉ.कल्पना गुप्ता

फाउंडेशन ऑफ़ एजुकेशन, शिक्षा संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)

दयालबाग,आगरा - 282005

2022

1.1.0. प्रस्तावना

शिक्षा के सभी स्तरों (प्राथमिक से उच्च स्तर तक के स्तर) में स्नातक स्तर विश्वविद्यालयी शिक्षा की पहली उपाधि होती है | स्नातक उपाधि 3 या 4 वर्षों का डिग्री प्रोग्राम होता है जहाँ विद्यार्थी अपनी रूचि और योग्यता के आधार पर विषयों का चयन करते है | यह उपाधि छात्रों को उनकी योग्यता, क्षमता और रूचि के अनुसार विभिन्न व्यवसायों को आगे बढ़ाने तथा कौशलों और ज्ञान के लिए प्रशिक्षित करती है | विशेषता के आधार पर स्नातक की उपाधि नौकरियों तथा उद्यमियों का विस्तार कर सकती है | इस स्तर पर आकर विद्यार्थियों के लिए शिक्षा के साथ कौशल विकास पहली आवश्यकता है, क्योंकि भारत में परम्परागत हुनर और कौशल रोजगार के शशक्त माध्यम है | और कौशल उन्नयन कर हम रोजगार के अवसर बढ़ाने में सफल हो सकते है | अतः वर्तमान समय में अध्ययन के दौरान विद्यार्थियों में ऐसे कौशलों का विकास करना होगा जो उसे आय के माध्यम तलाशनें के साथ-साथ संवेगों और आवेगों को सृजनात्मकता की ओर मोड़ सकें | आज की युवा पीढ़ी को ऐसे कौशल सिखाने चाहिए जो उन्हें सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बना सके | वर्तमान समय विज्ञान, प्रौद्योगिकी और उद्यमिता का समय है | इस समय मनुष्य के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष व्यवसाय होता है , क्योंकि उपजीविका का मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है इसलिए उद्यमिता के बारे में गंभीरता से विचार किया गया और इसे पाठ्यक्रम के रूप में विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में लागू कर दिया गया | परिणामस्वरुप, उद्यमिता राष्ट्र के समूचे आर्थिक विकास में एक अहम कड़ी के रूप में उभरकर सामने आई है | उद्यमिता एक बहुआयामी घटना है | अन्य शब्दों में कहें तो हम एक उद्यमी को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित करते है जो लाभ और व्यवसाय के विकास के लिए एक व्यवसाय की स्थापना और प्रबन्धन करता है | उद्यमिता रोजगार सृजित करनें और श्रम बाजार और अर्थव्यवस्था में समग्र रूप से आर्थिक शक्ति में सुधार के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बन गया है , (रहमान, उर अनीस एवं इलाही, अराफत याशीर, 2005) | भारत ने आज उद्यमिता शिक्षा के सन्दर्भ में प्रासंगिकता प्राप्त कर ली है | उद्यमिता शिक्षा विद्यार्थियों में कौशल और ज्ञान विकसित करने में मदद करती है जो उन्हें अपने स्वयं के उद्यमों का आयोजन और प्रबंधन शुरू करनें के लिए लाभ पहुंचा सकती

है | विभिन्न अध्ययनों से यह ज्ञात हुआ है कि औपचारिक नौकरी बाजार में रोजगार तक पहुँच प्राप्त करनें के लिए अधिकतर शैक्षणिक संस्थान कोई आश्वासन नहीं देते हैं, (तत्स्वमसी, सिंह पत्ता. 2005) | अतः हम कह सकते है की उद्यमिता शिक्षा महत्वपूर्ण है | उद्यमशीलता की गतिविधियाँ,आर्थिक विकास,नवाचार और रोजगार का महत्वपूर्ण घटक होती है | (जियाकोमीन, एट अल. 2011) | एक उद्यमी के विकास के लिए रचनात्मकता, नवाचार और चपलता जैसी विभिन्न दक्षताओं की आवश्यकता होती है इसीलिए अधिकांश संस्थानों ने वर्तमान में इस विश्वास के साथ उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करते है की उद्यमिता के महत्व और एक उद्यमिता बनाने के लिये आवश्यक ज्ञान और कौशल सिखाये जा सके | और दुनिया भर के देशों में उद्यमिता के प्रति समर्थन का अनुपात बढ़े | इसके अलावा उद्यमिता सोंच को बढ़ाने के लिए प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च स्तर तक सभी विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रमों को बढ़ावा मिले | उद्यमिता शिक्षा विद्यार्थियों को बॉक्स के बाहर सोंचने के लिए प्रशिक्षित करती है और अपरम्परागत प्रतिभाओं और कौशलों का पोषण करती है |

आज हम 21वीं सदी में है और इस समय सफल उद्यमी बनने के लिए ऐसे पाठ्यक्रमों का चयन करने की आवश्यकता है जो उद्यमशील अवसरों की पहचान करने, व्यावसायिक योजनायें बनाने, वित्तीय बैंकिंग सुरक्षित करनें और व्यावसायिक विकास के समन्वय में मदद करते है | भारत दुनिया का दूसरी सबसे बड़ी आबादी वाला देश है | यहाँ हर किसी को सरकारी नौकरी नहीं मिल सकती है | प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अलग-अलग प्राथमिकताएं होती है | कोई दूसरों से अच्छे सम्बन्ध तो कोई दूसरों पर प्रभुता बनाने में तथा किसी को जीवन में कुछ प्राप्त करनें की प्राथमिकता होती है, अतः ये तीनो अलग-अलग तीव्रता तथा प्रबलता में होती है | किसी में उपलब्धि अभिप्रेरणा तो किसी में प्रभुता अधिक होती है ,परन्तु एक सफल उद्यमी बनने के लिए व्यक्ति में उच्च कौशलों का विकास होना आवश्यक है जिनमें से उद्यमिता प्रतिभा, व्यावसायिक आकांक्षा, जोखिम लेने की क्षमता एवं उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता जैसे आदि गुणों का सबसे अधिक प्रबल होना अत्यंत आवश्यक है | इन्ही विशेष गुणों के माध्यम से कोई भी व्यक्ति सफल उद्यमी बन सकता है | अतः इस शोध अध्ययन का उद्देश्य शोधार्थिनी

द्वारा उद्यमिता शिक्षा प्राप्त कर रहे स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के उन गुणों या विशेषताओं का मापन कर उनके स्तरों का पता लगाना है जिससे यह अनुमान लगाया जा सके की निकट भविष्य में ये विद्यार्थी एक अच्छे उद्यमी बन सकते है की नहीं ? उनमें सम्बन्धित योग्यताओं, क्षमताओं का स्तर उच्च है, निम्न है, या मध्यम है |

1.1.1. उद्यमिता का अर्थ

उद्यमिता एक व्यवसाय जैसा होता है, जिसमें भरपूर लाभ व अत्यधिक पैसा कमानें के साथ-साथ असफल होने पर अत्यधिक जोखिम और हानि उठाना पड़ सकता है | अमेरिका (1984), में उद्यमिता पर आयोजित सम्मलेन में उद्यमिता की परिभाषा इस प्रकार दी गयी है - उद्यमिता किसी व्यावसायिक अवसर की खोज द्वारा उपयोगिता का सृजन करने, अवसर के अनुरूप जोखिम का प्रबंधन करने तथा सम्प्रेषण एवं प्रबन्धकीय योग्यताओं द्वारा परियोजनाओं की सफलता के लिए मानवीय, वित्तीय तथा सामग्री संसाधनो का उपयोग करनें का प्रयास है |अहमद एंड सीमोर. (2008). के अनुसार - उद्यमिता एक मानसिकता और प्रक्रिया है, जो व्यक्तियों को जोखिम लेने, रचनात्मकता और ध्वनि प्रबंधन के साथ नवाचार को मिश्रित करके शुष्क विकसित आर्थिक गतिविधि बनाने की अनुमति देती है | स्टेपनेक, जे.ई., (1982), के शब्दों में - उद्यमिता किसी उपक्रम में जोखिम उठाने की क्षमता, संगठन की योग्यता,एवं विविधिकरण करनें तथा नव प्रवर्तन को जन्म देने की इच्छा है | अतः कहा जा सकता है कि उद्यमिता नये संगठन आरंभ करने की भावना को कहते है | किसी वर्तमान या भावी अवसर का पूर्वदर्शन करके मुख्यता कोई व्यावसायिक संगठन प्रारंभ करना उद्यमिता का मुख्य पहलू है |

1.1.2 उद्यमिता प्रतिभा

एक सफल उद्यमी होने के लिए किसी व्यक्ति में विभिन्न प्रकार की क्षमताओं एवं प्रतिभाओं का संकलन होना आवश्यक है | जैसे- नए उत्पाद और नये अवसरों को अपनाने की सोंच,स्वयं पर विश्वास, लक्ष्य के प्रति ईमानदारी,किसी काम को चरणबद्ध तरीके से करना, समस्याओं की जानकारी और उन्हें दूर करनें की क्षमता का होना,बाजार के अनुसार मांग की पूर्ति करना, जरूरत के समय जोखिम उठाना, कार्य के प्रति सदैव सकारात्मक

रहना, तथा भविष्य में आने वाली समस्याओं से निपटना आदि प्रकार की क्षमताएं उद्यमिता प्रतिभा कहलाती है | किसी भी उद्यमी में इन सभी प्रकार की क्षमताओं का होना अनिवार्य है |

1.1.3 व्यावसायिक आकांक्षा

सामान्यतयः हम आकांक्षा शब्द का प्रयोग, उद्देश्यों, महत्वाकांक्षाओं, लक्ष्यों, अभिलाषाओं तथा इच्छाओं के पर्यायवाची के रूप में करते है | किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करनें की इच्छा आकांक्षा कहलाती है | आकांक्षा हम नित्य प्रति के जीवन में देखते है | इसलिए मुंडे मतिभिन्न ने कहा है कि विभिन्न व्यक्तियों की आकांक्षाओं में अंतर होना एक स्वाभाविक क्रिया है किसी भी मनुष्य के कार्य करनें की मात्रा एवं उस कार्य को सीखनें की मात्रा उसके आकांक्षा स्तर पर आधारित होती है | और यह आकांक्षा स्तर व्यक्ति के लक्ष्य की ओर इंगित करता है | द्रो एवं फाईट्स. [1969] . के अनुसार- आकांक्षाएं व्यक्ति की पसंद पर निर्भर होती है | आकांक्षा और पसंद कुछ स्तर पर एक दूसरे के समान है | आकांक्षाएं ही किसी व्यक्ति के व्यवसाय का निर्धारण करती है | किसी व्यवसाय के प्रति किसी व्यक्ति की जो भी आकांक्षा होती है उसे व्यावसायिक आकांक्षा कहते है | व्यावसायिक आकांक्षा व्यक्ति को वर्तमान में श्रेष्ठ करनें व श्रेष्ठ बनने के लिए प्रेरित करती है | वर्तमान में हम जानते है की हम क्या है ? किन्तु भविष्य में हम क्या हो सकते है ? यह सुनिश्चित नही कर पाते है इसीलिए आकाँक्षाओं में भेद करने का आंकलन करना आवश्यक हो जाता है | डालर एवं मिलर. (1963). ने कहा है कि - व्यावसायिक उद्देश्यों के प्रति किसी व्यक्ति को जानना ही व्यावसायिक आकांक्षा होती है |

1.1.4. जोखिम लेने की क्षमता

रेसनिक, (2003). के अनुसार- जोखिम उठाना एक सर्वव्यापी लेकिन साथ ही मानव जीवन में विवादास्पद घटना है | जोखिम लेना एक ऐसा व्यवहार है जो की शारीरिक,सामाजिक,और मनोवैज्ञानिक क्रियाओं में प्रतिकूल परिणामों की सम्भावना को बढ़ाता है | जो व्यक्ति अपनी सफलता और असफलता के बारे में अधिक चिंतित होते है , वे जीवन में सदैव जोखिम वहन करने के लिए तैयार रहते है | जोखिम लेने की इच्छा महत्वपूर्ण आर्थिक और गैर आर्थिक निर्णयों को प्रभावित करती है | सिंह, (1968), के अनुसार- जोखिम लेना अच्छी समझ, अभ्यास और

अनुशासन का विषय है | जोखिम हमारे दैनिक जीवन में हर क्षण बना रहता है | जीवन में नई चीजो और नयी वस्तुओं के आकर्षण के कारण ही जोखिम का अस्तित्व सामनें आता है | यदि हम कोई नया कार्य नही करेंगे तो हमे जोखिम से कम सामना करना होगा, लेकिन जोखिम तो सफलता की सीढ़ी की तरह है जिस पर उद्यमी न चढ़ा तो सफलता शायद ही मिल पाए | आज हर क्षेत्र में प्रतियोगिता का स्तर काफी ऊँचा हो गया अतः किसी मुकाम तक पहुँचने के लिए हमे आपसी प्रतिस्पर्धा के चलते बड़ा रिस्क उठाना ही पड़ता है, तभी किसी ऐसी मंजिल तक पहुंचा जा सकता है जो की हमारा सपना है |

1.1.5. उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता

आत्म-प्रभावकारिता इस बात को संदर्भित करती है की क्या एक व्यक्ति कुछ लक्ष्यों को प्राप्त कर सकता है | और सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत आत्म-प्रभावकारिता को व्यवहार के एक महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में मानता है (बन्डूरा, 1991) | उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता उद्यमिता अनुसन्धान में आत्म-प्रभावकारिता का अनुप्रयोग है | यह दर्शाता है की उद्यमी किस हद तक विभिन्न कार्यों और परियोजनाओं को पूरा करनें के लिए अपने स्वयं के उद्यम कौशलों के बारे में आश्वस्त है | उद्यमिता की प्रक्रिया असफलताओं से भरी होती है, जिसके लिए अच्छे मनोवैज्ञानिक गुणों वाले उद्यमियों की आवश्यकता होती है| और उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता उद्यमियों की एक विशिष्ट विशेषता, विभिन्न कठिनाईयों को दूर करने और उद्यमशीलता की सफलता को प्राप्त के लिए उद्यमियों के विश्वास और दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है |बन्डूरा के शोध में, उद्यमी आत्मप्रभावकारिता 1990 के दशक में उद्यमिता के क्षेत्र में लागू एक नयी अवधारणा के रूप में सामने आया और इसे उद्यमियों की अपेक्षाकृत स्थिर मनोवैज्ञानिक पूँजी के रूप में माना गया |(इब्रायेवा, 2016) | उद्यमी आत्मप्रभावकारिता उद्यमियों के आत्मविश्वास की तीव्रता को संदर्भित करता है, की क्या उनके स्वयं के उद्यमशीलता कौशल विभिन्न उद्यमशीलता गतिविधियों को पूरा कर सकते है , तथा यह इस बात को दर्शातें है की उद्यमी अपनें परिवेश को प्रभावित करने और सम्बन्धित कार्यों के माध्यम से सफल होनें की क्षमता से लैस है (बायड एंड वोजिकिस,1994; चेन एट अल, 1998) |

आज विकसित और विकासशील सभी देश उद्यमियों और उद्यमिता के महत्व को समझ चुके है, परिणाम स्वरुप विभिन्न प्रकार के उद्यमिता पाठ्यक्रमों का जैसे- ऑटोमोबाइल सेक्टर, कपडा उद्योग, लेदर ऊद्योग, फ़ूड प्रोसेसिंग, रिन्यूएबल एनर्जी, डेरी टेक्नोलॉजी, सिरेमिक एंड पोटरी डिजाइनिंग, आदि का क्रियान्वयन विभिन्न सरकारी और निजी शिक्षण संस्थानों में किया जा चुका है | अतः इस अध्ययन का दायरा तथा उद्देश्य नीति निर्माताओं को इस बात का अवलोकन कराना है की उद्यमशीलता का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों में उद्यमिता प्रतिभा, व्यावसायिक आकांक्षा, जोखिम लेने की क्षमता एवं उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता का स्तर क्या होगा |

1.2.0. समस्या का प्रादुर्भाव

नारायण, दिनेश के लेख पत्र- इंडिया, 2022 : हाई ऑन स्किल्स एंड लो ऑन जॉब्स तथा अन्य शोध पत्रों का अध्ययन करने के बाद ज्ञात हुआ की भारत में वर्ष 2022 तक लगभग 50 करोड़ कुशल युवाओं की आवश्यकता विभिन्न सेक्टर्स में होगी | सरकार, निजी क्षेत्र और युवा वर्ग ने मिलकर इस देश को विश्वव्यापी मैन्युफैक्चरिंग हब और कौशल का केंद्र बनाने की पुरज़ोर कोशिश कर रहे है | फलस्वरूप तीव्र आर्थिक विकास नें कुशल श्रमिकों की मांगमें 10 गुना तक वृद्धि कर दी है | हमारे देश में रोजगार की समस्या नही है वरन कुशल प्रतिभा, रोजगारपरक कौशलों की कमी है जो उद्योगों की जरूरत को पूरा कर सकें | इस पर अब सरकार खुद एक कौशल निर्माण मिशन पर तेजी से आगे बढ़ रही है | प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने फरवरी 2012 में एक श्रमिक सम्मलेन में कहा था की - 2004 के बाद से भारतीय अर्थव्यवस्था के तेजी से विकास ने हमारी कौशल विकास प्रक्रियाओं की कमियों को स्पष्ट रूप से सामनें लाकर खड़ा कर दिया है | जनसंख्या के स्तर से तो भारत दूसरे स्थान पर है परन्तु उद्यमिता के क्षेत्र में भारत अभी भी पीछे है क्योंकि कौशलात्मक कमी के कारण हम अभी भी अपनी अधिकतर आवश्यकताओं की पूर्ति विश्व बाजार से करते है | एक मामूली से पेस्ट के लिए भी हम बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर आश्रित है | अगर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाये तो हम यह अनुभव करेंगे की हम आयात अधिक और निर्यात कम करते है | ऐसा क्यूँ है ? इससे तो यही समझ आता है की देश में कार्यकुशलता के साथ उद्यमिता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण की भी कमी है | आज भी देश में लोग सरकारी नौकरी की कल्पना अधिक करते

है, वह यह सोंचते है की जब सरकारी नौकरी के लिए आयु सीमा खत्म हो जाएगी तब उद्यमिता के बारे सोंचेंगे परन्तु तब तक बहुत देर हो चुकी होती है | तब तक हमारे मन और मस्तिष्क में उतनी क्षमता नही रह जाती है की हम व्यावहारिक,रोजगारपरक,कौशलात्मक शिक्षा का अनुसरण करें | हम बहुत पीछे हो चुके होते है | अतः शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों को रोजगारयुक्त बनाये | वर्तमान में उद्यमिता शिक्षा के क्षेत्र में अधिक ध्यान दिया जा रहा है | परिणामस्वरुप उद्यमिता का विकास काफी तीव्र गति से हुआ है | इस समय भारत का उद्यमिता के क्षेत्र में विश्व में दूसरा स्थान है | यहाँ सभी उम्र के लोगो के लिए उद्यमिता के विकास के लिए पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध है | यहाँ उद्यमिता विकास के लिए आधारभूत संरचना, कम लागत पर वित्तीय साधन की उपलब्धता, सरकार की ओर से छूट, सरकारी नियंत्रण में ढील तथा प्रशिक्षण सुविधाएं आदि उपलब्ध है | इसके बावजूद लगभग 70% उद्यमी किसी न किसी कारण से असफल हो जातें है इसीलिए विश्व पटल पर कौशल विकास एक महत्वपूर्ण एजेंडा है | स्किल इंडिया के एजेंडे को प्राप्त करनें के लिए देश के विभिन्न सरकारी और निजी शिक्षण संस्थान तथा उद्यमिता कौशल विकास संस्थान आदि मिलकर काम कर रहे है | जिनका लाभ इन पाठ्यक्रमों में नामांकित विद्यार्थी उठा रहे है | चूँकि सरकार और शिक्षण संस्थानों द्वारा विभिन्न उद्यमिता कौशलों के विकास के लिए विभिन्न प्रोग्राम तो चलाये जा रहे है ,फिर भी बेरोजगारी की समस्या क्यूँ बनी हुई है | क्या शिक्षण संस्थान इन प्रोग्राम को चलाने की और विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने की केवल औपचारिकता निभा रहे है ? क्या उन्हें कुशल प्रशिक्षक नही उपलब्ध है | उनमें सफल उद्यमी के गुण विकसित हुए या नही यदि हुए तो किस स्तर तक हुए | इन सभी बिंदुओ के अध्ययन की की आवश्यकता ही इस समस्या के उद्भव के कारण है | इसलिए शोधार्थिनी द्वारा अध्ययन से सम्बन्धित पूर्व में किये गये निम्नलिखित अध्ययनों का अवलोकन किया गया है -

तालिका सं. 1 सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

क्र.सं.	अध्ययनकर्ता एवं वर्ष	अध्ययन विषय	निष्कर्ष
1-	तनेजा, नेहा एंड भाटिया,हितेश (2021)	मीसरिंग एन्टरप्रिन्योरियल सेल्फ-एफिकेसी:अ-कम्प्रिहेंसिव स्केल	यह अध्ययन उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता के उल्लेखनीय पैमानों की व्यापक समीक्षा करके उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता को मापने के लिए मौजूदा उपकरणों को परिष्कृत करता है और भारतीय सन्दर्भ में प्रासंगिक उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता के व्यापक पैमाने को विकसित करता है |
2 -	रॉय,अंकिता. (2021)	कौशल विकास : भारत में अवसर और चुनौतियाँ	भारत देश एक विशाल जनसंख्या वाला देश है जिसका मतलब है की उसके पास श्रम बाजार को कुशल जनशक्ति प्रदान करने की बहुत अधिक गुंजाईश है । अतः सभी को एक समन्वित प्रयास करने की जरूरत है जिसमे सरकारी एजेंसियां ,निजी संस्थान आदि शामिल है ।
3 -	अब्राहम,एलिजा-बेथेन (2020)	एन्टरप्रिन्योरिअल सेल्फ-एफिकेसी ऑफ़ ट्रिबल फार्मर्स: अ मिक्स्ड मैथड स्टडी इन नागालैंड, इंडिया	इस अध्ययन का उद्देश्य उन आदिवासी किसानो के बीच उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता के विकास में योगदान देने वाले कारकों को समझना था, जिनका उद्यमशीलता को करने का इरादा था | इस अध्ययन के द्वारा ऐसे नौ कारको का पता लगाया गया जिन्होंने आदिवासी किसानो की उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता के विकास योगदान दिया | आदिवासी किसान समुदाय, सामाजिक अन्तःक्रियाओं और समर्थन प्रणालियों पर बहुत अधिक निर्भर करते है इन समुदायों में एक व्यक्ति केवल एक उद्यमी नहीं है बल्कि एक स्वस्थ और संवादात्मक सामाजिक व्यवस्था का उत्पाद है जो अपने सदस्यों को बढ़ने देता है | परिवार और दोस्तों के अलावा सरकारी और गैर-सरकारी संगठन भी उद्यमियों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है | जनजातीय किसान जो समर्थन का अनुभव करते है, वे खुद को अधिक स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने में सक्षम होते है और तनाव कम होता है,जिससे उनके उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता में सुधार होता है|
4 -	भारद्वाज, प्रियंका (2020)	एंटरप्रिन्योरिअल टैलेंट अमंग टीचर ट्रेनीस इन रिलेशन टू देयर सोशल मोटिव्स एंड आर्गेनाइजेशनल क्लाइमेट	- सरकारी संस्थानों में अध्ययनरत पुरुष और महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं के बीच उद्यमशीलता की प्रतिभाओं में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया । - निजी शिक्षण प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत पुरुष और महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं के बीच उद्यमशीलता की प्रतिभाओं में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया

			- सरकारी कॉलेजों के पुरुषों और महिला शिक्षक प्रशिक्षुओं के उद्यमशीलता की प्रतिभा और संगठनात्मक जलवायु में महत्वपूर्ण और सकारात्मक सम्बन्ध मौजूद है । - उद्यमी पुरुष और महिला शिक्षकों की संगठनात्मक जलवायु में कोई महत्वपूर्ण और नकारात्मक सम्बन्ध मौजूद नही है ।
5 -	साहेब,वाई., एट.आल.	एन्टरप्रिन्योरियल सेल्फ-एफिकेसी एंड इंटेंसन : डू एन्टरप्रेन्योरिअल क्रिएटिविटी एंड एजुकेशन मैटर ?	इस अध्ययन का अवलोकन करने से यह ज्ञात हुआ की उद्यमी रचनात्मकता, उद्यमी दृष्टिकोणों के बीच उद्यमिता शिक्षा सम्बन्धों को बताती है | शैक्षिक अभिरुचि और उद्यमी अभिवृत्ति और एन्टरप्रेन्योरियल इंटेंसन के मध्य सम्बन्धों में सकारात्मक रूप से मध्यस्थता करता है | इसके अलावा उद्यमिता शिक्षा उद्यमिता को सफलता पूर्वक विकसित करनें के लिए उद्यमिता अभिरुचि विकसित करते है | भले ही उनके देश की आर्थिक परिपक्क्वता कैसी भी हो|
6 -	यादव, मुरारी सिंह , (2018)	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का एक अध्ययन	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में लिंग एवं विषय वर्ग का प्रभाव नही पड़ता है । छात्र एवं छात्राओं की व्यावसायिक आकांक्षा में अंतर है एवं कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यर्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में अंतर नही पाया गया |
7 -	तिवारी, ऋत्विज (2018)	व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन :उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो के कक्षा ग्यारहवी के विद्यार्थी”	छात्रों की व्यावसायिक आकांक्षा पर उनके लिंग भेद पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता है । तथा न ही व्यावसायिक आकांक्षा पर लिंग व शालाओं के प्रकार का,अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ता है |
8 -	जसना एंड अन्तों-सिस तथा सहयोगी. (2018)	“रिस्क टेकिंग प्रोपेंसिटी एंड एंटरप्रेन्योरशिप : दि रोल ऑफ़ पॉवर डिस्टेंस”	जोखिम लेने की प्रवृत्ति और उद्यमिता का धनात्मक सम्बन्ध पाया गया | एक नये उद्यम की दिशा में उद्यमशीलता का प्रयास जोखिम भरा हो सकता है | उद्यमी विभिन्न प्रकार के जोखिम को स्वीकारते है जब वे किसी नई फर्म की स्थापना करते है | जोखिम के प्रति व्यक्तिगत की गड़बड़ी ही जोखिम भरे निर्णयों को प्रभावित करती है | सफल उद्यमी मध्यम जोखिम लेने वाले होते है |
9 -	चंद्रा,तूलिका. (2018)	“कौशल विकास और महिला सशक्तिकरण”	भारतीय महिलाओं की भागीदारी और कौशल निर्माण एवं विकास संतोष जनक नही है । लेकिन कौशल विकास के नये कार्यक्रम,सरकार तथा निजी क्षेत्र की कौशलनिर्माणमेंभागीदारी,अनुसन्धानतथाविकासकार्यक्रम,वित्तीय समावेशन आदि महिला सशक्तिकरण की दिशा में में सकारात्मक योगदान देंगे |

10 -	अहमद, इशरार, (2017).	“एन्टरप्रिन्योरशिप डेवलपमेंट एंड एम.एस. एम.ई, सेक्टर :अ स्टडी ऑफ जे.एंड के”	उद्यमिता किसी भी देश की उद्यमशील गतिविधि तथा किसी भी देश की आर्थिक उन्नति के लिए आवश्यक है । जितना अधिक आर्थिक विकास होगा उतना अधिक देश विकसित होगा । उद्यमशीलता की गतिविधियों को उत्पादन और रोजगार सृजन के एक अलग और महत्वपूर्ण पहलू के रूप में स्वीकार करना बहुत ही आवश्यक है ।
11 -	आलम, महबूब. (2016).	भारतीय महिला उद्यमिता की समस्याएं, जरनल ऑफ़ सोशियो एजुकेशनल एंड कल्चरल रिसर्च, 2(5), 2394-2878,	इस शोध अध्ययन में महिला उद्यमियों की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है | इसमें पूर्वांचल की ग्रामीण महिला उद्यमियों के सन्दर्भ में अध्ययन किया गया है |इस अध्ययन का यह निष्कर्ष निकला की भारतीय महिला उद्यमियों के प्रोत्साहन के लिए तथा महिला शशक्तिकरण के लिए सरकार ने जो भी प्रयास किये है, उसका पूर्ण लाभ महिलाओं को नही मिल पा रहा है | महिला उद्यमी एक तरफ तो व्यवसाय से सम्बन्धित समस्याओं का सामना कर रही है | तथा दूसरी तरफ एक महिला होने के नाते दूसरी समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है |
12 -	बीना, (2015)	“रोल ऑफ़ डेवलपमेंट इंस्टिट्यूट इन द स्टेबलिशमेंट ऑफ़ माइक्रो, स्माल एंड मीडियम इंटरप्राईजेस: अ केश स्टडी ऑफ़ भिवानी हरियाणा”	एम.एस.एम.ई.के परामर्श और विकास कार्यक्रम बहुत प्रभावी थे जिसे लोगो को इस ओर अधिक प्रोत्साहित करके उन्हें सशक्त बना सकते है ।
13 -	याद, एस.आर. (2015).	“उद्यमिता विकास कार्यक्रमों का सूक्ष्म लघु एंवम माध्यम उद्योगों के विकास में योगदान पूर्वी उत्तर प्रदेश के विशेष सन्दर्भ में”	उत्तर प्रदेश को विकसित प्रदेश बनाने के लिए उद्यमियों तथा उद्यमिता कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना होगा तभी राज्य में सभी को रोजगार, आय में समानता,प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि,आवश्यक वस्तुओं का सस्ते मूल्य पर उपलब्ध होना,सरकार को राजस्व में वृद्धि एवं सर्वत्र खुशहाली का वातावरण बनना सम्भव हो सकेगा ।
14 -	तिवारी, मनीषा. (2015)	“प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर एवं मानसिक योग्यता स्तर के बीच अन्तः निर्भरता का अध्ययन”	यह अध्ययन बताता है की छात्र हो या छात्राएं प्रशिक्षण लेने के उपरांत उनमें परिक्वता आ ही जाती है । इसी कारण प्रशिक्षित विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में अंतर देखनें को नही मिलता है । बिना प्रशिक्षण प्राप्त किये हुए विद्यार्थियों की रुचियाँ एवं आकांक्षा स्तर एक सा नही रहता है । प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर पाया जाता है । प्रशिक्षण से उनमें ज्ञान एवं कौशल की वृद्धि होती है । जिसके द्वारा वह अपनें

			लिए बेहतर चुनने के लिए स्वतंत्र होते है । जबकि प्रशिक्षण के बगैर विद्यार्थियों में यह अनुभव व यह परिपक्वता देखने को मिलती है ।
15 -	दास सूरत कुमार, (2014)	"ग्रोथ एंड प्रोस्पेक्ट ऑफ़एम.एस.एम.इ.इन उड़ीसा-एन एनालिटिकल एप्रोच"	उड़ीसा में एम.एस.एम.इ.के द्वारा विकास दर में बहुत प्रगति हुई व इसके द्वारा सामाजिक आर्थिक विकास हुआ।
16 -	मेयर, केटरीन एट अल. (2013). (पे.न.-1251)	"एंटरप्रिन्योरियल टैलेंट एंड वेंचर परफोरमेंस : अ मेटा एनालिटिक इन्वेस्टीगेशन ऑफ़ एसएमइज"	इस अध्ययन में यह पाया गया की एंटरप्रिन्योरिअल टैलेंट में परिवर्तनशील उद्यम चर में सार्थक अन्तर होता है और यह महत्वपूर्ण विषमताएं मौन उपायों में मौजूद है । साथ ही हम यह कहते है की उद्यमशीलता की प्रतिभा विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में अधिक से अधिक प्रासंगिक है ।
17-	लुकिटो, जेंनी. (2013).	एक्सामिनिग एन्टर-प्रिन्योरियल सेल्फ-एफिकेसी अमंग स्टूडेंट्स	इस अध्ययन का उद्देश्य एक विश्वविद्यालय के छात्रो के बीच उद्यमशीलता की आत्म- आत्म-प्रभावकारिता के स्तर की जाँच करना था,जिसने पाठ्यक्रम में उद्यमिता शिक्षा को अपनाया था | इस अध्ययन में 199 स्नातक शामिल थे जो 4 सेमेस्टर के लिए उद्यमिता के पाठ्यक्रम में भाग ले रहे थे | परिणामों से पता चला की छात्रो में उद्यमिता आत्म-प्रभावकारिता का स्तर उच्च था |
18 -	रहमान, अनीश यू.आर. (2012)	"एन्टरप्रिन्योरशिप एजुकेशन इन इंडिया-स्कोप चैलेंजेस एंड रोल ऑफ़ बी.स्कूल इन प्रमोटिंग एन्टरप्रिन्योरशिप एजुकेशन"	भारत के राष्ट्र के रूप में बी.स्कूलों की महत्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि वे भविष्य के उद्यमियों के लिए प्रजनन का आधार है । उनके पास न केवल व्यक्तिगत गुणों को जीतने की क्षमता, विकसित करने की क्षमता है बल्कि स्वयं के लिए और दूसरों के लिए रोजगार बनाने का अवसर भी है उद्यमिता रोजगार और उद्यम निर्माण,बेरोजगारी और कम रोजगार दोनों के संकटों का समाधान प्रदान करते है । बी-स्कूल अवसरों की पहचान करके,और पर्यावरण के द्वारा लगाये गये बाधाओं को दूर करने के तरीकों को इंगित करके ज्ञान के आधार को बढानें में मदद करते है । समाज में उद्यमियों के पूल को बढ़ाकर उद्यमिता वृद्धि में उनकी एक निश्चित भूमिका है । इसलिए भारत सरकार को भारत में उद्यमिता शिक्षा को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए उचित उपाय करने चाहिए ।

उपर्युक्त अध्ययनों के अवलोकन से ज्ञात हुआ की उद्यमिता शिक्षा, उसके प्रभाव, तथा उद्यमिता शिक्षा से विद्यार्थियों की व्यावसायिक ,मानसिक, कौशालात्मक विकास, एवं जोखिम से सम्बन्धित क्षमता पर क्या प्रभाव

पड़ा ? तथा यह भी ज्ञात हुआ की प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा एवं व्यावसायिक परिपक्वता में अंतर होता है | प्रशिक्षित विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा एवं व्यावसायिक परिपक्वता अप्रशिक्षित विद्यार्थियों से अधिक पाई गयी | दास, सूरत, कुमार. (2014). के अध्ययन से ज्ञात हुआ की सरकार और विभिन्न शिक्षण संस्थान,उद्यमिता कौशलों का प्रशिक्षण प्रदान कर रहे है, तथा विद्यार्थी प्रशिक्षित होकर नये उद्यम की स्थापना के साथ-साथ लोगो को रोजगार भी प्रदान कर रहे है | जिससे देश की अर्थव्यवस्था का भी विकास हुआ | इन अध्ययनों के पश्चात् शोधार्थिनी के समक्ष एक ऐसा अध्ययन किये जाने की आवश्यकता महसूस की गयी की जिससे यह ज्ञात किया जा सके कि विभिन्न प्रकार के शिक्षण संस्थानों में जो भी उद्यमिता पाठ्यक्रम चलाये जा रहे है या उन पाठ्यक्रमों में जो विद्यार्थी संलग्न है,उनमें विभिन्न प्रकार के कौशलों जैसे -उद्यमिता प्रतिभा ,व्यावसायिक आकांक्षा, जोखिम उठाने की क्षमता तथा उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता आदि का विकास किस स्तर तक हुआ है | क्यूंकि शोधार्थिनी ने यह अनुभव किया की जब सरकार, निजी संस्थाएं, विद्यालय, महाविद्यालय, तथा विश्वविद्यालय सभी मिलकर विभिन्न उद्यमियों के विकास हेतु विश्व स्तर पर कौशल विकास कार्यक्रमों का क्रियान्वयन तथा उद्यमिता शिक्षा को प्रदान कर रहे है और प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थी भी उद्यमिता शिक्षा का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे है तो भी बेरोजगारी क्यूँ है ? इसका क्या कारण है ? क्या प्रशिक्षणार्थियों में उद्यमिता शिक्षा लेने के बाद भी उद्यमिता से सम्बन्धित आवश्यक प्रतिभाओं का विकास नही हुआ ? यदि विकास हुआ तो किस स्तर तक हुआ ? अतः इस अध्ययन के द्वारा शोधार्थिनी इस बात पर प्रकाश डालने का प्रयास करेगी की विद्यार्थियों में उद्यमी बनने की योग्यता किस स्तर तक है ,जिससे यह भविष्यवाणी की जा सकेगी कि - विद्यार्थी अच्छे उद्यमी बन सकेंगे या या नही ?

1.3.0 समस्या का औचित्य

एक सफल उद्यमी में विभिन्न प्रकार की प्रतिभाओं जैसे- रिस्क उठाने की क्षमता, संगठन निर्माण, नवाचारी कार्य, अवसरों को पहचानने की योग्यता, उच्च आकांक्षा तथा सामूहिक कार्य करने की योग्यता आदि का होना अति आवश्यक है | क्यूंकि जहाँ किसी काम को करनें की इच्छा प्रबल होगी वहां मार्ग अवश्य ही प्रशस्त होगा | और

इन्ही प्रतिभाओं के कारण भारत में जी.डी. बिड़ला, जे.आर.डी.टाटा, रामकृष्ण बजाज, एस.एल.किर्लोस्कर, धीरुभाई अम्बानी जैसे- अनेक महान उद्यमी हुए है | शोधार्थिनी नें समस्या से सम्बन्धित अनेक अध्ययनों का अवलोकन किया जिससे यह ज्ञात हुआ की कहीं तो विद्यार्थियों की पारिवारिक प्रष्ठभूमि परम्परागत शिक्षा की ओर ज्यादा उन्मुख थी तो कहीं लोग सरकारी नौकरी को ज्यादा सुरक्षित मानते है | और ऐसे लोग उद्यमिता की और कम ध्यान देते है | अफ़सोस तो इस बात का है कि आज भी ऐसी बहुत सी शिक्षण संस्थाएं है जो उद्यमिता शिक्षा की अपेक्षा उन विषयों पर ज्यादा ध्यान देते है जो रचनात्मकता, और महत्वाकांक्षी रूप से सोंचनें में मदद नही करते है | वर्तमान में तो बेरोजगारी हटाने के लिए युवक युवतियों को प्रशिक्षण देकर उद्यमी बनाये जाने की भी बात कही जा रही है | इसका क्या अर्थ समझा जाये ? यही न कि जिन व्यक्तियों में उद्यमी बनने की योग्यता ही नही है उन्हें भी प्रशिक्षण देकर उद्यमी बना सकते है | अगर इसका यही अर्थ है तो भारत से भी बेरोजगारी, गरीबी, निम्न जीवन स्तर, विदेशो पर निर्भरता, आदि समस्याओं का समाधान होने की पूर्ण सम्भावना है |

आलम, महबूब, (2016). के अध्ययन का अवलोकन करनें से ज्ञात हुआ की- भारतीय महिला उद्यमियों के प्रोत्साहन के लिए सरकार नें जो भी प्रयास किये है, उसका पूर्ण लाभ महिलाओं को मिल ही नही पाया क्योंकि उन्हें विभिन्न प्रकार के पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है | आज भी उन्हें पारिवारिक और सामाजिक सहयोग का अभाव है |

इसी प्रकार तिवारी, मनीषा, (2015). के अध्ययन का अवलोकन करने से ज्ञात हुआ कि छात्र हो या छात्राएं उनमें प्रशिक्षण लेने के उपरांत परिपक्वता आ ही जाती है अर्थात उन कौशलों का विकास हो जाता है जिसके लिए वे प्रशिक्षण प्राप्त करते है और बिना प्रशिक्षण प्राप्त विद्यार्थियों की रुचियों एवं आकाँक्षाओं का स्तर एक सा नही रहता है | प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर पाया गया | प्रशिक्षण से विद्यार्थियों में उन सभी आवश्यक प्रतिभाओं का विकास हो जाता है ,जो सम्बन्धित व्यवसाय के लिए आवश्यक है | जिससे वह अपने जीवन में बेहतर चुनने के लिए स्वतंत्र होते है | अतः उपरोक्त अध्ययन के अवलोकन से शोधार्थिनी के समक्ष यह प्रश्न उत्पन्न हुआ कि- क्या वास्तव में प्रशिक्षण प्राप्त कर लेने मात्र से ही विद्यार्थियों

में उद्‌यमिता के प्रति परिपक्क्वता, व्यावसायिक आकांक्षा, उद्‌यमिता प्रतिभा, जोखिम उठाने सम्बन्धी योग्यता का विकास हो जाता है ? अगर हो जाता है तो किस स्तर तक होता है ? चूँकि साधारणतया विद्‌यार्थियों के अंदर कुछ प्रतिभाएं जन्मजात होती है परन्तु प्रशिक्षण के माध्यम से इन कौशलो और उद्‌यमिता प्रतिभाओं का विकास किस स्तर तक किया जा सकता है | इस प्रश्न के उत्तर की जाँच हेतु यह शोध न्यासंगत है | किसी व्यक्ति का जीवन निर्माण आकांक्षा स्तर द्‌वारा प्रभावित होता है | एक व्यक्ति क्या करना चाहता है, वह किस दिशा में कितना प्रयास व कितनी सफलता प्राप्त करेगा, यह उसकी आकांक्षा स्तर पर निर्भर करता है | वर्मा, लक्ष्मी एंड अग्रवाल, पद्‌मा एट अल.(2016). | आकांक्षाएं और पसंद लगभग एक दूसरे पर निर्भर करती है तथा कुछ स्तर तक ये एक-दूसरे के समान होती है और शोधार्थिनी नें यह स्वयं अनुभव किया की पसंद और आकांक्षाएं व्यक्ति में परिपक्वता और वातावरणीय कारकों के कारण परिवर्तित होती रहती है | परन्तु कुछ आकांक्षाएं व्यक्ति की कभी नही बदलती है , हाँ यह हो सकता है की व्यक्ति उन आकांक्षाओं को अपने अचेतन मन में दबा देता है परन्तु वे जीवन में कभी न कभी अप्रत्यक्ष रूप से बाहर आ ही जाती है जैसे- कोई शिक्षक एक अच्छा अभिनेता भी होता है और कोई लेखक एक अच्छा उद्‌यमी भी बन सकता है | चूँकि व्यावसायिक उद्‌देश्यों के प्रति किसी व्यक्ति की इच्छाओं को जानना ही व्यावसायिक आकांक्षा होती है | अतः स्नातक स्तर के उद्‌यमिता शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्‌यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा किस स्तर की है ? इसी क्रम में रोटस (1943), वाल्टर मार्सेल्फ़ (1951), लॉवेल व एटकिन्स (1953), व वोरेल (1959), तथा मनोरमा (1990), आदि ने सफल व असफल विद्‌यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया, जिसमें इन्होने अधिकांश किशोरों का का आकांक्षा स्तर उच्च पाया | किशोरों में पायलट, डॉक्टर, इंजीनियरिंग, पी.एच.डी.आदि व्यावसायों का चयन कर अरामपूर्वक जीवन व्यतीत करने की आकांक्षा पाई गयी | परन्तु उद्‌यमिता के सन्दर्भ में व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन नहीं किया गया | अतः शोधार्थिनी द्‌वारा यह जानने का प्रयास किया जायेगा की उद्‌यमिता के क्षेत्र में व्यावसायिक आकांक्षा का स्तर क्या है ? इस प्रश्न के उत्तर को जानने हेतु यह अध्ययन न्याय संगत है |

इसी प्रकार जोखिम लेना भी एक ऐसा व्यवहार है जो की शारीरिक, सामाजिक, और मनोवैज्ञानिक क्रियाओं में प्रतिकूल परिणामों की सम्भावना को बढ़ाता है | जोखिम जीवन के हर क्षेत्र में लेना पड़ता है | एक माँ अपने बच्चे को जन्म देते समय, एक पिता अपने परिवार को समाज की विभिन्न मुसीबतों एवं समस्याओं से बचाने के लिए जोखिम लेता है |अर्थात जीवन के सभी महत्वपूर्ण निर्णय जोखिम पूर्ण होते है जोखिम लेने का व्यवहार ही व्यक्ति को उन्नतिशील बनाता है | यह व्यक्ति की न केवल मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को पूरा करता है बल्कि उन्हें आगे बढ़ने के लिए भी प्रेरित करता है | शैक्लिन, हाकिन्स एवं अन्य, (2002). ने अमेरिका के युवाओं में जोखिम के व्यवहार का निरीक्षण किया तो ज्ञात हुआ की स्वास्थ्य के प्रति जोखिम लेने का व्यवहार ही ज्यादातर असामान्य बीमारियों एवं मृत्यु का कारण बनते है | और यह व्यवहार किशोरों और वयस्कों में ज्यादा पाया जाता है | चूँकि आज जीवन के हर क्षेत्र में प्रतियोगिता का स्तर काफी ऊँचा हो गया है और किसी मुकाम तक पहुँचने के लिए हमे आपसी प्रतिस्पर्धा के चलते बड़ा रिस्क लेना ही पड़ता है तभी हम किसी ऐसी मंजिल तक पहुँच सकते है जो की हमारा सपना है | अतः शोधार्थिनी ने यह अनुभव किया की विद्यार्थियों के अंदर जोखिम लेने की क्षमता उनकी अपनी पारिवारिक प्रष्ठभूमि, परम्परागत शिक्षा एवं उपयुक्त वातावरण के अभाव के कारण कम विकसित हो पाती है परन्तु प्रशिक्षण के माध्यम से इस योग्यता को विकसित किया जा सकता है | जैसे यदि किसी बच्चे को ऊँची जगह से छलांग लगाने को कहो तो वह डरेगा | परन्तु धीरे-धीरे लोगो को देखकर प्रशिक्षण के द्वारा वह ऊचाई से कूदने का जोखिम उठा लेगा | अतः उद्यमिता पाठ्यक्रमों द्वारा विद्यार्थियों में जोखिम उठाने की क्षमता किस स्तर तक प्रभावित हुयी है ? इस प्रश्न के उत्तर हेतु शोध का यह विषय न्यासंगत है |

उद्यमशीलता की आत्म-प्रभावकारिता को व्यक्ति के संज्ञानात्मक ज्ञान और विशेषताओं के रूप में देखा जा सकता है | ये दोनों व्यक्ति के उद्यमी इरादों के निर्माण में प्रमुख भूमिका निभाते है | उद्यमी इरादे को एक व्यक्ति के द्वारा स्व-स्वीकृत दृढ़ विश्वास के रूप में परिभाषित किया गया है कि वे भविष्य में एक नया व्यवसाय या उद्यम स्थापित करनें की योजना बना सकते है, (थांम्पसन, 2009) | व्यक्तिगत प्रतिबद्धता के समान, कॉलेजों के छात्रों की उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता इस सम्भावना की भविष्यवाणी कर सकती है कि वे भविष्य में व्यवसाय

शुरू करेंगे या नहीं (लियू, 2011) | अतः इस अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थियों की उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता का अध्ययन किया जा सकेगा तथा विद्यार्थियों में उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता किस स्तर की है ? इस प्रश्न के उत्तर हेतु शोध का यह विषय न्यायसंगत है |

1.4.0. शोध प्रश्न

शोधार्थिनी के मन में अग्रलिखित शोध प्रश्न उत्पन्न हुए, जिनका उत्तर शोधार्थिनी द्वारा किये गये वर्तमान शोध अध्ययन के द्वारा प्राप्त हो सकेगा |

1- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उद्यमिता प्रतिभा का स्तर क्या है ?

2- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का स्तर क्या है ?

3- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जोखिम लेने की क्षमता का स्तर क्या है

4- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उद्यमी स्व-आत्मप्रभावकारिता का स्तर क्या है ?

5- क्या स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उद्यमिता प्रतिभा में सार्थक अंतर है है |

6- क्या स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में सार्थक अंतर है ?

7- क्या स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जोखिम लेने की क्षमता में सार्थक अंतर है |

8- क्या स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता में सार्थक अंतर है ?

अतः औद्योगिक भारत में उपरोक्त सार्थक शोध प्रश्नों की खोज के सन्दर्भ में शोधार्थिनी द्वारा स्नातक स्तर में संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के कौशलात्मक विकास, उद्यमिता प्रतिभा, व्यावसायिक आकांक्षा,जोखिम लेने की क्षमता एवं उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता के तुलनात्मक अध्ययन के सन्दर्भ में अध्ययन किया जायेगा ।

1.5.0 - समस्या

स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उद्यमिता प्रतिभा, व्यावसायिक आकांक्षा, जोखिम लेने की क्षमता एवं उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता का तुलनात्मक अध्ययन |

1.6.0. समस्या में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

1.6.1. स्नातक स्तर

सैद्धांतिक परिभाषा

स्नातक स्तर भारतीय शिक्षापद्धति का वह स्तर होता है जिसे ग्रैजुएट (graduate) की संज्ञा दी जाती है | वर्णाश्रम और शिक्षा ग्रहण का भारतीय विधान यह था कि द्विज ब्रह्मचारी यज्ञोपवीत संस्कार के बाद अपनी शिक्षा को पूर्ण करने के उद्देश्य से गुरुकुल जाता था | वहाँ ब्रह्मचर्य और शिक्षा समाप्त कर चुकने पर उस ब्रह्मचारी का समावर्तन संस्कार होता था और वह गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के लिए घर लौटता था। लौटते समय उसे एक प्रकार का याज्ञिक स्नान कराया जाता था, जिससे उसे स्नातक की संज्ञा मिलती थी | शिक्षा, संस्कार तथा विनय की पूर्णता अथवा अपूर्णता की दृष्टि से स्नातकों के तीन प्रकार माने जाते थे | वेदाध्ययन मात्र को पूर्ण करनेवाले की विद्या को स्नातक की संज्ञा दी जाती थी। वह ज्ञानप्राप्ति के बाद घर वापस चला जाता था | व्रत स्नातक वह होता, जिसने ब्रह्मचर्याश्रम के सभी व्रतों (विनय और नियमों) का तो पालन कर लिया हो, किंतु वेदाध्ययन की पूर्णता न प्राप्त की हो | विद्याव्रत स्नातक का तीसरा प्रकार ही विशिष्ट था,

जिसमें अध्ययन और व्रत नियम आदि की समान सिद्धि प्राप्त की जा चुकी हो | कभी-कभी स्नातक अपनी शिक्षा प्राप्त कर घर नहीं लौटता था, अपितु गुरुकुल में ही अध्यापन का कार्य शुरु कर देता था | किंतु इससे उसके स्नातकत्व में कोई कमी नहीं पड़ती थी |

कार्यात्मक परिभाषा

स्नातक स्तर उच्च शिक्षा प्राप्त करने की पहली सीढ़ी होती है , यह पहली उपाधि होती है जिसमे प्रवेश के लिए विद्यार्थी को इंटरमीडिएट की परीक्षा पास करनी होती है | स्नातक उपाधि 3 या 4 वर्षो का डिग्री प्रोग्राम होता है, जिसमें विद्यार्थी अपनी रूचि और योग्यता के आधार पर अपने विषयों का चयन करने में पूर्ण स्वतंत्र होता है

1.6.2. उद्यमिता पाठ्यक्रम

उद्यमिता कौशलों को बढ़ावा देने वाली वह विषय सामग्री जिसके माध्यम से विद्यार्थी अपने उद्यमिता कौशलों को विकसित कर अधिक कुशल उद्यमी बन सकते है । विभिन्न शिक्षण संस्थानो में ऐसे कई कोर्सेज है जिनको ग्रहण करके विद्यार्थी रोजगार प्राप्त करते है । साथ ही उद्यमिता के क्षेत्र में नित नये प्रयोग करते है । विभिन्न शिक्षण संस्थानो में उद्यमिता शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न पाठ्यक्रम जैसे- बी.वोक.इन.रिन्यूएबलएनर्जी, बी.वोक.इन.टेक्सटाइल डिज़ाइन, बी.वोक. इन फ़ूड प्रोसेसिंग, बी.वोक.इन ऑटोमोबाइल, बी.वोक.इन डेरी टेक्नोलॉजी, बी.वोक.इन.अपेरल डिजाईन, कमर्शियल आर्ट आदि |

1.6.3. उद्यमिता प्रतिभा

सैद्धांतिक परिभाषा

फैरेंट, (2005). अनुसार- उद्यमिता प्रतिभा अनिश्चित दुनिया में निर्णय लेने के लिए आवश्यक सामग्री की खोज करनें, प्रक्रिया का चयन करने, व्याख्या करने और उपयोग करने की क्षमता और फिर बाजार में अवसरों की पहचान तथा अवसरों का फायदा उठाने की क्षमता को कहते है |

कार्यात्मक परिभाषा

उद्यमिता प्रतिभा क्षमताओं, लक्षणों और स्वभाव का संयोजन है जो एक व्यक्ति को अनिश्चितता की स्थिति में अपने व्यक्तिगत जोखिम पर एक नया व्यवसाय और उद्यम संचालित करने के लिए पूँजी जुटाने में सक्षम है |

1.6.4 व्यावसायिक आकांक्षा

सैद्धांतिक परिभाषा

किट्स (1963). के अनुसार - व्यावसायिक आकाँक्षाओं के विकास के विभिन्न स्तरों के सन्दर्भ में विचार किया | जिसके अंतर्गत प्रतिष्ठा, रूचि, का विचार किया | डालर एवं मिलर, (1963). ने कहा है कि - व्यावसायिक उद्देश्यों के प्रति किसी व्यक्ति को जानना ही व्यावसायिक आकांक्षा होती है |

कार्यात्मक परिभाषा

किसी व्यवसाय के प्रति किसी व्यक्ति विशेष के व्यावसायिक उद्देश्यों को जानना ही व्यावसायिक आकांक्षा होती है|

1.6.5. जोखिम लेने की क्षमता

सैद्धांतिक परिभाषा

रेसनिक, (2003). के अनुसार, जोखिम लेना एक ऐसा व्यवहार है जो की शारीरिक , सामाजिक, और मनोवैज्ञानिक क्रियाओं में प्रतिकूल परिणामों की सम्भावना बढ़ाता है |

कार्यात्मक परिभाषा

जोखिम लेने की क्षमता से तात्पर्य - इरादे या उम्मीद की स्थिति से की गई भूल के एक परिणाम के रूप नुकसान की घटना की सम्भावना से है क्यूंकि आज हर क्षेत्र में प्रतियोगिता का स्तर काफी ऊँचा हो गया है | अतः किसी मुकाम तक पहुँचने के लिए हमे आपसी प्रतिस्पर्धा के चलते बड़ा रिस्क उठाना ही पड़ता है | तभी किसी मंजिल तक पहुंचा जा सकता है जो की हर सफल उद्यमी का गुण है

1.6.6. उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता

सैद्धांतिक परिभाषा (बंडूरा 1997, 2001) के अनुसार

आत्म-प्रभावकारिता अपनी स्वयं की क्षमता का बोध है जिसका अर्थ यह विश्वास है जिसे हम कुछ विशिष्ट बना सकते है | 1994 में बायडेट वोजिकिस नें इस विचार का प्रस्ताव दिया की आत्म-प्रभावकारिता उद्यमी क्षमता पर विचार करना सम्भव बनाती है |

कार्यात्मक परिभाषा

उद्यमी आत्मप्रभावकारिता उद्यमियों के आत्मविश्वास की तीव्रता को संदर्भित करता है, की क्या उनके स्वयं के उद्यमशीलता कौशल विभिन्न उद्यमशीलता गतिविधियों को पूरा कर सकते है , तथा यह इस बात को दर्शातें है की उद्यमी अपनें परिवेश को प्रभावित करने और सम्बन्धित कार्यों के माध्यम से सफल होनें की क्षमता से लैस है |

1.7.0 अध्ययन के उद्देश्य

1- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उद्यमिता प्रतिभा के स्तर का अध्ययन करना |

2- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा के स्तर का अध्ययन करना |

3-स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जोखिम लेने की क्षमता के स्तर का अध्ययन करना |

4- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता के स्तर का अध्ययन करना |

5- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उद्यमिता प्रतिभा का तुलनात्मक अध्ययन करना |

6- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा का तुलनात्मक अध्ययन करना |

7- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जोखिम लेने की क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना |

8- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता का तुलनात्मक अध्ययन करना |

1.8.0. अध्ययन की परिकल्पनाएं

1- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उद्यमिता प्रतिभा में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

2- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

3- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जोखिम लेने की क्षमता में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

4- स्नातक स्तर पर संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

1.9.0 समस्या का सीमांकन

- प्रस्तुत शोध अध्ययन को न्यादर्श की दृष्टि से दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, दयालबाग, आगरा तक सीमित रखा जयेगा |
- प्रस्तुत शोध अध्ययन को स्तर की दृष्टि से स्नातक स्तर के बैचलर ऑफ़ वोकेसन के सेमेस्टर 5th और 6th के विद्यार्थियों तक सीमित रखा जायेगा |

● प्रस्तुत शोध अध्ययन संकाए की दृष्टि से तीन संकायों - कला संकाए, विज्ञान संकाए तथा इंजीनियरिंग संकाए, तक सीमित रखा जायेगा |

● प्रस्तुत शोध अध्ययन व्यावसायिक पाठयक्रमों की दृष्टि से वर्तमान में दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट में संचालित कुल 12 पाठ्यक्रमों का चयन किया जायेगा |

● प्रस्तुत शोध अध्ययन जनसंख्या की दृष्टि से कला संकाए, विज्ञान संकाए, अभियांत्रिकी संकाए के 12 पाठ्यक्रमों में पंजीकृत लगभग 600 में से 300 विद्यार्थियों का चयन किया जायेगा|

1.10.0 अध्ययन के चर

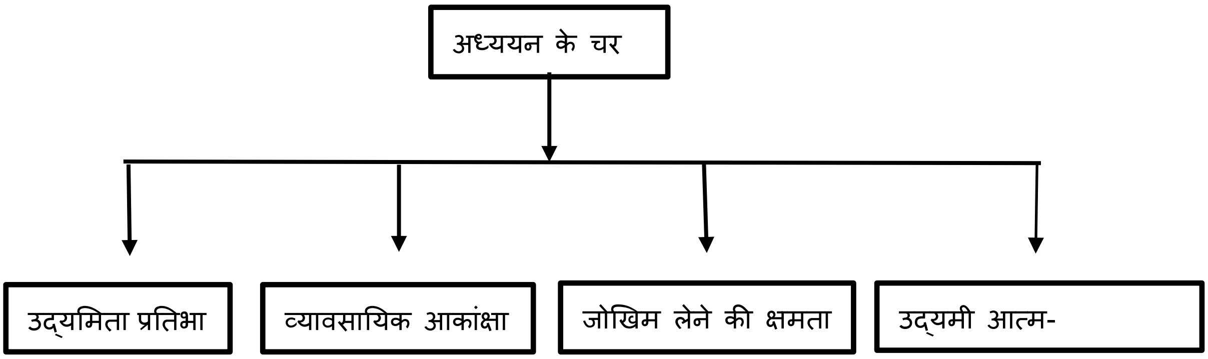

चित्र संख्या 1 - अध्ययन के चर

1.11.0. अध्ययन की समष्टि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की जनसंख्या में आगरा शहर में स्थित दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट के बैचलर ऑफ़ वोकेसन के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा |

1.12.0. अध्ययन का प्रतिदर्श

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट, विभिन्न संकाए (कला,विज्ञान,अभियांत्रिकी) तथा विभिन्न संकाए के बैचलर ऑफ़ वोकेसन (बी.वोक.) के 12 पाठ्यक्रमों में से 300 इकाईयों का चयन किया जायेगा |

1.13.0. अध्ययन में प्रयुक्त प्रतिदर्शन विधि

सोद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि द्वारा एजुकेशनल इंस्टिट्यूट तथा बैचलर ऑफ़ वोकेसन (बी.वोक.) के 12 पाठ्यक्रमों का चयन किया जायेगा, और साधारण याद्रच्छिक न्यादर्शन चयन विधि द्वारा इन 12 पाठ्यक्रमों में पंजीकृत लगभग 600 इकाइयों में से न्यादर्श के रूप में 300 इकाईयों का चयन किया जायेगा |

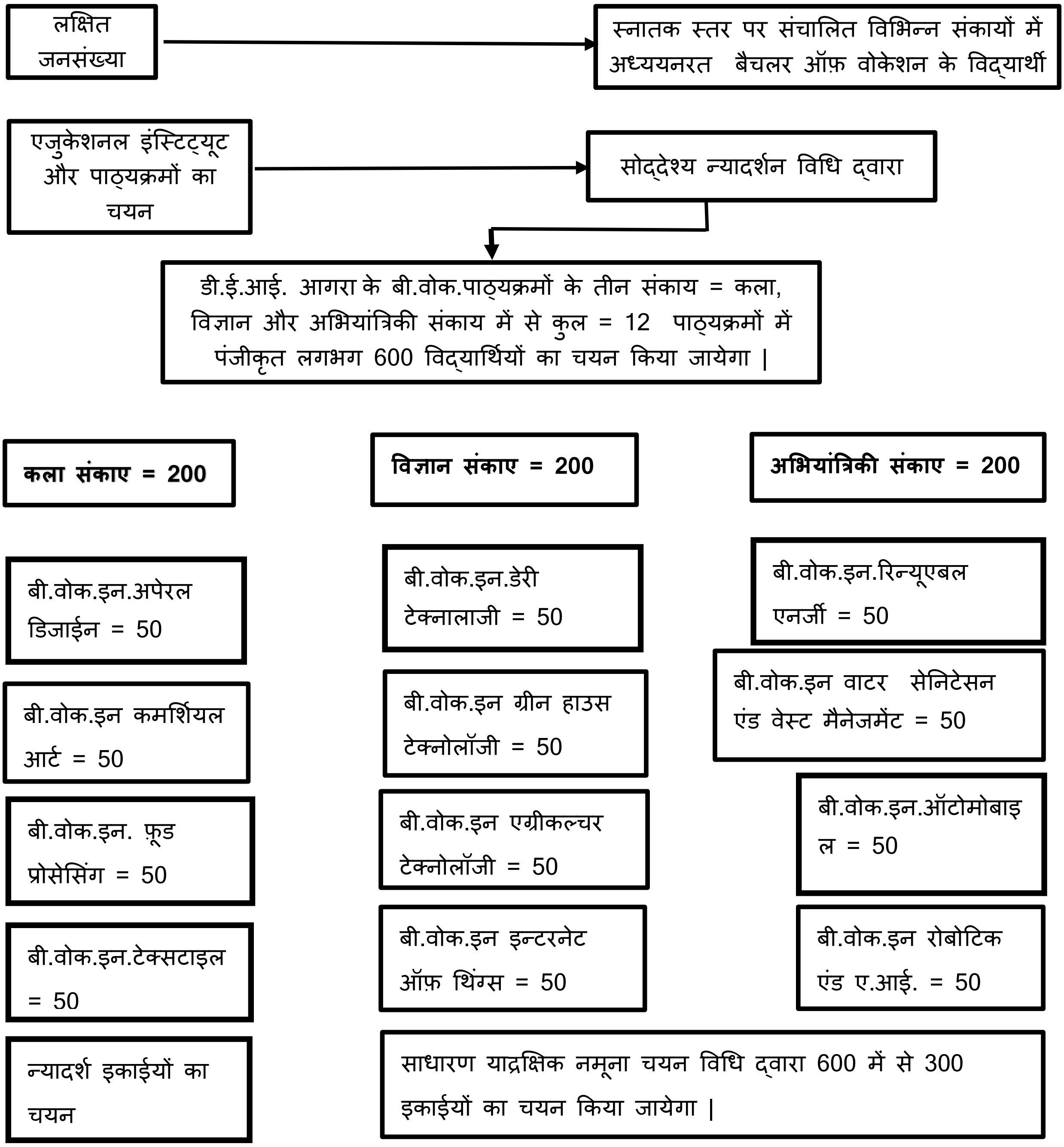

चित्र संख्या -1 प्रतिदर्श चयन की प्रक्रिया का प्रदर्शन

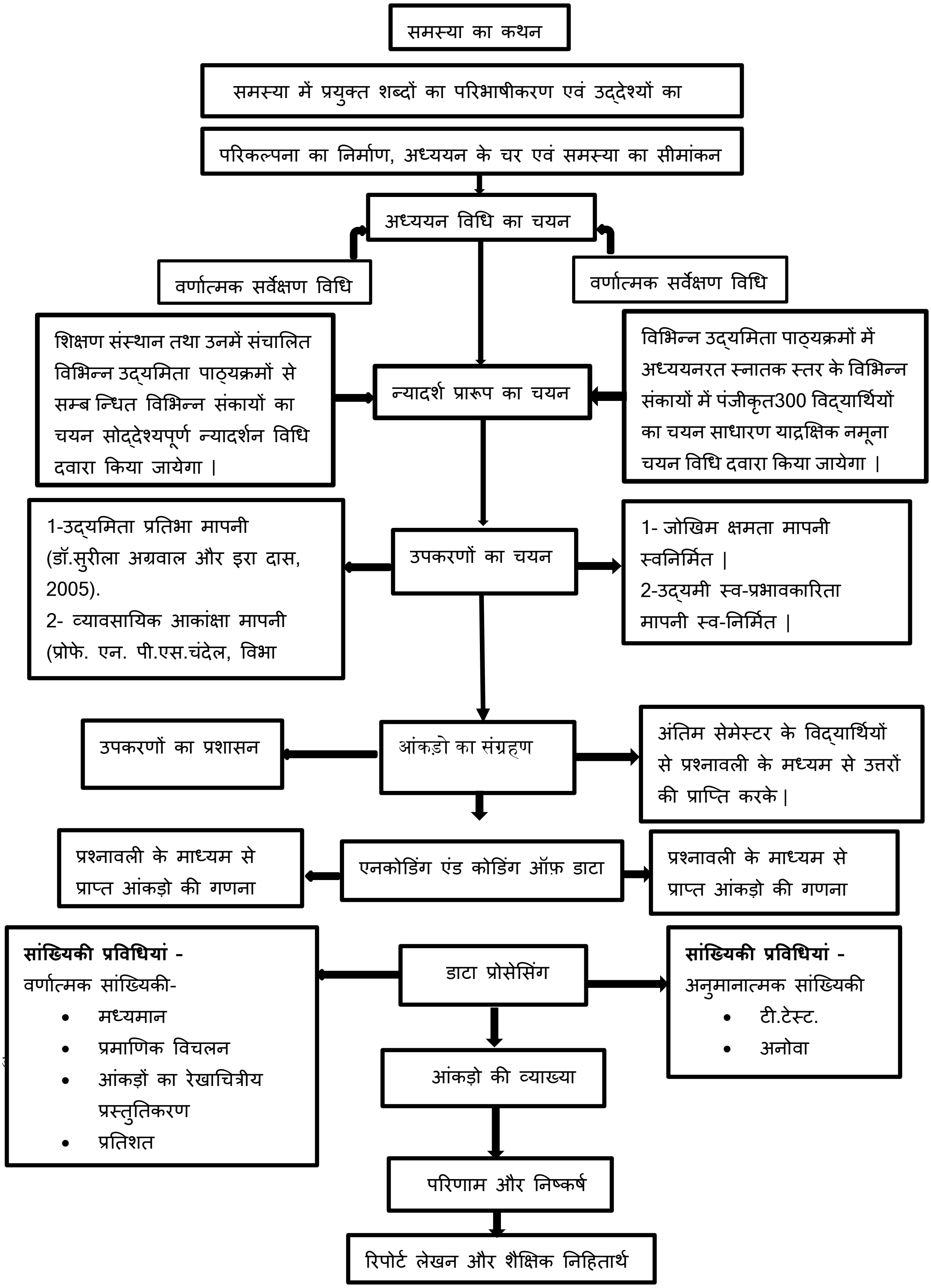

चित्र सं.4 - शोध प्रारूप का प्रदर्शन

1.14.0. अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण एवं उपकरणों का सर्वेक्षण

तालिका सं. 2 अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण एवं उपकरणों का सर्वेक्षण

क्र. सं.	परीक्षण का नाम	संस्करण	निर्माता	विश्वसनीयता	वैद्‌यता	अध्ययन में प्रयोग किये जाने वाले उपकरणों की न्यायोचितता
1.14.1. उद्‌यमिता प्रतिभा से सम्बन्धित उपकरण						
1	एन्टरप्रिन्योरियल पोटेंशियल स्केल (2003)	इंग्लिश	मैक एंड मार्कले	क्रानबेक अल्फा =0.804	वैद्‌यता गुणांक .78	चूँकि यह उपकरण अधिक पुराना है। तथा इस उपकरण में उन सभी आयामों को नहीं शामिल किया गया जिसका मापन शोधार्थिनी द्‌वारा स्वयं के अध्ययन में किया जायेगा। अतः इस उपकरण का प्रयोग शोधार्थिनी द्‌वारा नहीं किया जायेगा।
2	उद्‌यमिता प्रतिभा मापनी (2005)	हिंदी और इंग्लिश	डॉ.सुरीला अग्रवाल और डॉ. इरा दास	टेस्ट री टेस्ट मैथड, विश्वसनीयता गुणांक -.89	कंकर्रेंट वैलिडिटी मैथड,वैद्‌यता गुणांक (.78)	चूँकि इस उपकरण में अध्ययन किये जाने वाले चर से सम्बन्धित सभी आयाम जैसे तनाव, सहिष्णुता, उपलब्धि प्रेरणा, संगठनात्मक योग्यता, उद्‌यमिता के प्रति दृष्टिकोण, समस्या समाधान योग्यता, आदि सम्मिलित है | इस उपकरण में 103 प्रश्न है | यह उपकरण 7 उपखंडों में विभा -जित है | अतः शोधार्थिनी द्‌वारा इस उपकरण का प्रयोग न्यायोचित रहेगा।
1.14.2 व्यावसायिक आकांक्षा से सम्बन्धित उपकरण						
1-	व्यावसायिक आकांक्षा मापनी (1990)	हिंदी और इंग्लिश	डॉ.जे.एस. ग्रेवाल	टेस्ट रि-टेस्ट मैथड, विश्वसनीयता गुणांक =0.84	वैद्‌यता गुणांक =0.75	इस परीक्षण के अंतर्गत 80 व्यवसायों को रखा गया है | एक प्रश्न के अंतर्गत 10 व्यवसायों को रखा गया है इस प्रकार कुल =8 प्रश्न और 80 व्यवसायों जैसे - वकील, नाई, टीचर, डॉक्टर आदि | चूँकि यह उपकरण उच्च माध्यमिक स्तर पर अप्लाई किया गया है अतः इस उपकरण का उपयोग सम्बन्धित अध्ययन में करना न्यायोचित नहीं है |

2-	व्यावसायिक आकांक्षा मापनी [2012]	हिंदी और इंग्लिश	प्रो.एन.पी. एस.चंदेल ,विभा लक्ष्मीऔर रंजीत सिंह	टेस्ट री-टेस्ट / स्प्लिट हाफ मैथड विश्वसनीयता गुणांक (.82)	वैद्यता गुणांक - 0.75	चूँकि यह उपकरण स्नातक स्तर के 1000 विद्यार्थियों पर अप्लाई किया गया | अतः यह उपकरण शोधार्थिनी के अध्ययन से सम्बन्धित है अतः इस उपकरण का उपयोग न्यायपूर्ण होगा |
1.14.3 जोखिम लेने की क्षमता से सम्बन्धित उपकरण						
1-	जोखिम क्षमता मापनी	हिंदी	स्व-निर्मित की जाएगी |	टेस्ट री-टेस्ट मैथड [सम्भावित]	-	शोधार्थिनी द्वारा जोखिम क्षमता से सम्बन्धित विभिन्न उपकरणों का अध्ययन किया गया परन्तु सभी उपकरण उद्यमिता से सम्बन्धित नहीं थे अतः शोधार्थिनी द्वारा स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया जायेगा |
1.14.4. उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता से सम्बन्धित उपकरण						
1-	एन्टरप्रेन्योरिअल सेल्फ-एफिकेसी (1998)	इंग्लिश	सी.चेन, पी. ग्रीन,ए.क्रिक.	क्रोनबेक अल्फ़ा आल>0.72 , टोटल एन्टप्रेन्योर सेल्फ - एफिकेसी (वनडाइमेंशन) =0.89	आइटम वर डीराइव्ड यूसिंग मेनेजर्स एंड एन्टरप्रेन्योर्स	इस उपकरण का निर्माण बंडूरा के सिद्धांत की सहायता से किया गया है साथ ही इस उपकरण में 6 डाइमेंशन को सम्मिलित किया गया है परन्तु सभी डाइमेंशन शोधार्थिनी के अध्ययन से सम्बन्धित नहीं है अतः इस उपकरण की सहायता से शोधार्थिनी द्वारा नव उपकरण का निर्माण किया जायेगा जो स्व-निर्मित होगा |
2-	एन्टरप्रेन्यो-रिअल सेल्फ-एफिकेसी (2009)	इंग्लिश	मैकगी,जे. पेटर्सन, एम.,मुलर ,एस., सिकोरिया , जे.,	अल्फ़ा>0.83	इंस्ट्रूमेंट आइटम वर डेवलप्ड यूसिंग अ पैनल एन्टरप्रेन्योर्स स्केल वर वैलिडेट बाई द सेम पैनल.	चूँकि यह उपकरण उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता का मापन करता है तथा यह कॉलेज लेवल के विद्यार्थियों के लिए है | परन्तु इस उपकरण में उन सभी कारकों का समावेश नहीं किया गया जिसका मापन शोधार्थिनी द्वारा किया जायेगा | अतः इस उपकरण की सहायता से शोधार्थिनी द्वारा नए उपकरण का निर्माण किया जायेगा जो स्व निर्मित होगा |

उपरोक्त तालिका में विभिन्न अध्ययनो में उपयोग किये गए समस्या से सम्बन्धित विभिन्न उपकरणों का रिव्यू किया गया | जिससे यह ज्ञात हो सका की प्रस्तावित शोध में उद्यमिता प्रतिभा के मापन हेतु डॉ.सुरीला अग्रवाल

और डॉ. इरा दास द्वारा निर्मित उपकरण तथा व्यावसायिक आकांक्षा के मापन हेतु प्रो.एन.पी.एस.चंदेल, विभा लक्ष्मी और रंजीत सिंह जी द्वारा निर्मित उपकरण, का प्रयोग न्यायोचित होगा | परन्तु जोखिम लेने की क्षमता तथा उद्यमी आत्म-प्रभावकारिता से सम्बन्धित गुणों का मापन करने हेतु कोई उपयुक्त उपकरण उपलब्ध नहीं है अतः इन चरों के मापन हेतु शोधार्थिनी द्वारा स्व-निर्मित उपकरण का प्रयोग किया जायेगा |

1.15.0. शोध अध्ययन विधि : वर्णात्मक सर्वेक्षण अध्ययन विधि

1.16.0. प्रस्तुत शोध प्रस्ताव हेतु प्रयुक्त सांख्यिकी प्रविधियाँ

1 मध्यमान

2 प्रमाणिक विचलन

3 प्रतिशत

4 अनोवा

5 आलेख प्रस्तुतीकरण

1.17.0. शैक्षिक निहितार्थ

- इस शोध अध्ययन के द्वारा विद्यार्थियों में विभिन्न उद्यमिता कौशलों के विकास के स्तरों केबारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त होगी ।
- इस शोध अध्ययन के द्वारा उद्यमिता प्रशिक्षण में आने वाली कमियों का पता लागाया जा सकेगा ।
- इस शोध के द्वारा जो निष्कर्ष प्राप्त होंगे उससे शैक्षिक एवं व्यावसायिक नीति को विकसित करनें में सहायता प्राप्त होगी ।
- इस शोध के माध्यम से हम यह जान सकेंगे की दयालबाग शिक्षण संस्थान में संचालित विभिन्न उद्यमिता पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को किस स्तर तक उद्यमिता कौशल सिखाने में सफल हुए ।
- इसके द्वारा शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्थानों को प्रष्ठपोषण प्रदान किया जा सके |

- इस अध्ययन के मध्यम से यह भविष्यवाणी की जा सकेगी की कोई विद्यार्थी उद्यमिता के क्षेत्र में कितना सफलता प्राप्त कर सकेगा |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि

भरद्वाज, प्रियंका एंड जुनेजा,पी.सी. (2020). एन्टरप्रेन्योरियल टेलेंट अमंग टीचर ट्रेनीज इन रिलेसन टू देयर सोशल मोटीव्स एंड आर्गनाइजेशनल क्लाईमेट. जर्नल ऑफ़ एजुकेशनल एंड डेवलपमेंट, अलोक चक्र जर्नल. X I (VI). आई.एस.बी.एन. 2231-3990, पे.8138-8150 .

मेहता, रत्ना. (2020) .व्हाई डस इंडिया नीड्स मोर वीमेन इंटरप्रिन्योर ?,योरस्टोरी.कॉम., योरस्टोरी मीडिया प्राईवेट लिमिटेड.

नौलखा, आर.एल. (2019). उद्यमिता के आधारभूत तत्त्व, आई.एस.बी.एन.न.- 81812740, आर.बी.डी. पब्लिशिंग हाउस, जयपुर एंड दिल्ली .

अग्रवाल, प्रवीण तथा मिश्रा, अवनीश. (2019). उद्यमिताके मूल आधार ,साहित्य भवन,पब्लिकेशन्स,आगरा

नंदन, नीलेकनी . (2018). उभरते भारत की तस्वीर , प्रभात पब्लिकेशन नई दिल्ली

जसना एउर, अन्तोंसिस एट.आल. (2018). रिस्क टेकिंग प्रोपेंसिटी एंड एन्टरप्रेन्योरशिप : द रोल ऑफ़ पॉवर डिस्टेंस,जर्नल ऑफ़ एन्टरप्राईजिंग कल्चर. 26(01) : 1-26 .

गुलवाने,ललित एंड नायर, पद्मा. (न्यू एडिसन). एन्टरप्रेन्योरशिप, गुप्ता अतुल (फुल मार्क्स प्राईवेट लिमिटेड). दरयागंज, न्यू दिल्ली - 110002

मोहन, विधू एंड भारती, लीना. (2017). इफेक्ट ऑफ़ कोगनिटिव स्किल ऑन एन्टरप्रेन्योरियल टेलेंट : अ कॉन्टेक्सचुअल स्टडी. इंडियन जर्नल ऑफ़ हेल्थ एंड वेल बीइंग. 25(12),1514-1517. https://www.ebsco.com/products/ebscohost-research-platform

सेरी, पेक्कला केर एट.आल. (2017). पर्सनालिटी ट्रेट्स ऑफ़ एन्टरप्रेन्योर्स : अ रिव्यू ऑफ़ रीसेंट लिटरेचर. जर्नल ऑफ़ एन्टरप्राई जिंग कल्चर. 26(01), कॉपीराइट .

तिवारी, नेहा. (2017). विमेंस एंटरप्रिन्योरशिप इन इंडिया : अ लिटरेचर रिव्यू. एमिटी जर्नल ऑफ़ . इंटरप्रिन्योरशिपएमिटी यूनिवर्सिटी लखनऊ, इंडिया.

योगनंदन, जी. एंड चन्देर, राजनवीन. (2017). अ स्टडी ऑन प्रोब्लेम्स ऑफ़ यंग एन्टरप्रेन्योरशिप इन इंडिय. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंटिफिक रिसर्च. वेबसाइट- रिसर्चगेट.नेट./पब्लिकेशन/344315740.

बीना. (2015). रोल ऑफ़ डेवलपमेंट इंस्टिट्यूट इन द सस्टेनेबिलिटी ऑफ़ माइक्रो. स्माल एंड मीडियम एंटरप्राईजेस : अ केस स्टडी ऑफ़ भिवानी हरियाणा,

तिवारी, मनीषा, (2015), प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षा एवं मानसिक योग्यता स्तर के बीच अन्तः निर्भरता का अध्ययन, शोध गंगा, इनफ्लिबनेट.एसी.इन.

मिश्र, कलराज, (2014), भारत में उद्यमिता, सम्पादक- कुमार बसंत ,प्रभात पब्लिकेशन ,नई दिल्ली ।

मेयर, केटरिन एट.अल. (2013). एन्टर प्रेन्योरियल टेलेंट एंड वेंचर परफोर्मेंस : अ मेटा एनालिटिक इंवेस्टिगेसन ऑफ़ एसएमईज. एल्सवेयर, 42(6-7). 251-1273.

https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0048733313000474

महाजन, शिखा, (2013), विमेंस एंटरप्रिन्योरशिप इन इंडिया, ग्लोबल जर्नल ऑफ़ मैनेजमेंट एंड बिजनेस स्टडीज, 3(10), 1143-1148. आईएसएसएन नं- 2248 -9878. http://www.ripublication.com/gjmbs.htm.

नारायण, दिनेश. (2013). इंडिया-2022 : हाई ऑन स्किल्स बट लो जॉब्स. फ़ोर्ब्स इंडिया.कॉम. (मार्च 2021).

https://www.forbesindia.com/article/real-issue/india-2022-high-on-skills-but-low-on-jobs/35553/1

एडवर्ड, एल.जे., मुइर, इ.जे. (2012), एवैलूएटिंग एन्टरप्राईजिंग एजुकेशन:व्हाई डू इट ?,एजुकेशन+ट्रेनिंग, 54(4), 278-290.

कुमार, एन.बी. गुगलोथ, एस.(2012), माइक्रो स्माल एंड मीडियम एन्टरप्राइसिस इन इन द 21 सेंचुअरी, जेडईएनआईटीएच इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ बिजनेस इकोनॉमिक्स एंड मैनेजमेंट रिसर्च, वोल्यूम.न.-2 (5) 23-38.

दोहसे डी., वाल्टर, एस.जी.(2012), नोलेज कॉन्टेक्स्ट एंड एन्टरप्रीन्योरिअल इंटेनसन अमंग स्टूडेंट्स, स्माल बस इकान 39, 877-895.डीओआई 10. 1007/एस 11187-009-9238-वाई.

यूरोपियन कमीशन. (2012). एन्टरप्रिन्योरशिप एजुकेशन ऑन इन्क्रीसिंग. रिट्राईव्ड फ्रॉम :https://ec.europa.eu/enterprise/newsroom/cf/itemdetail.cfm?itemid=5877=?&lang=It

यूरोस्टेट. (2012).स्टेटिस्टिक्स/डाटाबेस बाई थीम्स/लेबरमार्केट/एम्प्लायमेंट एंड अनएम्प्लायमेंट. रिट्राईव्ड फ्रॉम http://epp.eurostat.ec.europa.eu/portal/page/portal/statistics/search

जोशी, धर्मकीर्ति, व अन्य (2010), स्किलिंग इंडिया : द बिलियन पीपुल्स चैलेन्ज, सीआरआईएल - सेंटर फॉर इकोनॉमिक्स.

कर्लिंगर,एफ.एन.,(2009),फाउंडेशन ऑफ़ बिहैवियरल रिसर्च,(IInd Edi.), न्यू दिल्ली, सुरजीत पब्लिकेशन, 300-313.

अग्रवाल सुरीला एंड दास इरा, (2005). एन्टरप्रेन्योरिअल टैलेंट, अंकुर साइकोलॉजी एजेंसी, 22/481, इंदिरा नगर, लखनऊ (यू.पी.), इंडिया.

अरेनिअस, पी.,मिन्निती,एम.(2005). पेर्सेप्चूअल वैरिएबल्स एंड नससेंट एन्टरप्रेन्योरशिप. स्माल बिज़नेस इकोनॉमिक्स, 24(3), 233-247.

ज़िमरमैन बी.जे.,(2000), सेल्फ-एफिकेसी: एन एसेंसियल मोटिव टू लर्न, कंटेम्पोरेरी एजुकेशनल साइकोलॉजी, 25(1), 82-91.

गैरिट,हेनरी ई.(1986),स्टैटिस्टिक्स इन साइकोलोजीएंड एजुकेशन,लीगमेन्स ग्रीन एंड कंपनी,न्यूयॉर्क ।